

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 611

26 जून, 2019 को उत्तर के लिए

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के ब्लास्ट फर्नेस-3 में दुर्घटना

611. श्री वि. विजयसाई रेड्डी:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या यह सच है कि हाल ही में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के ब्लास्ट फर्नेस-3 में दुर्घटना हुई थी जिसके कारण भारी क्षति हुई थी;
- (ख) क्या यह सच है कि विस्फोट इस वजह से हुआ क्योंकि अधिकारीगण यह तथ्य जानने के बावजूद कि इसकी क्षमता केवल 7200 मिलियन टन की है; 9200 मिलियन टन इस्पात का उत्पादन करना चाहते थे;
- (ग) यदि हां, तो सरकार द्वारा दोषी अधिकारियों के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गयी है;
- (घ) ब्लास्ट फर्नेस-3 ने कब से काम करना शुरू कर दिया है और इसकी वजह से राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड को कितना नुकसान हुआ; और
- (ङ) इस प्रकार की दुर्घटनाओं को दोबारा होने से रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जाने का विचार है?

उत्तर

इस्पात मंत्री

(श्री धर्मेंद्र प्रधान)

(क): जी नहीं। तथापि आरआईएनएल के ब्लास्ट फर्नेस-3 में दिनांक 18.01.2019 को ब्लो पाइप फटने की घटना हुई थी। जली हुई वायु नलिका (टयूर) को उपलब्ध पुर्जों से बदला गया था। ब्लास्ट फर्नेस को कोई हानि नहीं पहुँची।

(ख) और (ग): जी नहीं। फर्नेस 7800 टन/प्रतिदिन की औसत उत्पादन दर से प्रचालित है। उसे ठीक करने के बाद फर्नेस 7900 टन/प्रतिदिन (7 दिन का औसत) की दर पर प्रचालन कर रहा है जो सामान्य प्रचालन रेंज के अंदर है।

(घ): इस घटना के 21 घंटों के अंदर फर्नेस का प्रचालन पुनः शुरू हो गया था। हानि की राशि अनुमानित है।

(ङ): आरआईएनएल ने संयंत्र में होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कई उपाय किए हैं। इन उपायों के साथ-साथ, शिड्यूल के रख-रखाव का अनुपालन, सुरक्षा प्रबंधन के लिए सुव्यस्थित उचित पहुँच पर जोर देना, सुरक्षा पद्धतियों का दृढ़ अनुपालन, नियमित निरीक्षण, सुरक्षा जागरूकता हेतु अनिवार्य प्रशिक्षण तथा विशेष प्रशिक्षण, सुरक्षा जाँच का संचालन करना, निजी सुरक्षा उपकरणों के उपयोग पर जोर देना और कारखाना अधिनियम, 1948 के प्रावधानों के अनुरूप तैयार की गई आपात योजना का उचित कार्यान्वयन आदि का अनुपालन भी शामिल है। इसके अतिरिक्त, दुर्घटना के विश्लेषण के आधार पर अच्छे अभ्यास से सीखने की सहूलियत के उद्देश्य से क्षेत्र विशेष की सुरक्षा संबंधी कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिसमें सभी प्रमुख इस्पात उत्पादक सम्मिलित हुए।